National Journal of Multidisciplinary Research and Development
ISSN: 2455-9040; Impact Factor: RJIF 5.22
www.nationaljournals.com
Volume 2; Issue 1; January 2017; Page No. 31-33

पुराणों में नदियों का महत्त्व

डॉ० निशा

पी० एच० डी० संस्कृतहिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, समरहिल, शिमला, हिमचल प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

विश्व की प्राचीनतम भारतीय संस्कृति के भण्डार पुराण भारत की पुरातन संस्कृति के अतीत को वर्तमान के साथ जोड़ने वाली एक स्वर्णिम शृंखला है। जिस प्रकार गङ्गा के जल में स्नान करने से पाप नष्ट हो जाते हैं उसी प्रकार पुराण को सुनने से समस्त दुःखों का नाश हो जाता है।

यथा पापानि पूयन्ते गंगावारि विगाहनात्।
तथा पुराण श्रवणाद् दुरितानां विनाशनम्।।[1]

जो नरश्रेष्ठ अठारह पुराणों का विधिपूर्वक श्रवण करता है या सुनाता है वह पुनः इस संसार में जन्म नहीं लेता है अर्थात् उसे मोक्ष की प्राप्ति हो जाती है।

अष्टादश पुराणामि यः शृणोति नरोत्तमः।
कथयेद्वा विधानेन नेह भूयः स जायते।।[2]

पुराण मानव के जीवन में ज्ञान का प्रकाश फैलाते हैं। मनुष्य को पाप से मुक्त करने के अनेक उपाय बतलाये गए हैं। जिसमें नदियाँ भी हैं। कुछ नदियाँ मनुष्य को दोष मुक्त कर देती हैं। अतः पुराणों में अनेक पवित्र नदियों की उपादेयता बतलायी गई है।

नदी शब्द का सर्वप्रथम उल्लेख ऋग्वेद के नदीसूक्त में किया गया है। नदीसूक्त में देवी के रूप में नदी की स्तुति की गई है। नदियों का पर्वतों से घनिष्ट सम्बंध बतलाया गया है।[3] संस्कृत शब्दार्थ कौस्तुभ के अनुसार नदी का अर्थ जलधारा या स्त्रोत है।[4] नदियाँ समस्त संसार के लिए उपयोगी है। हम हमेशा से सुनते आए हैं कि जल ही जीवन है। समस्त प्राणी जगत के लिए जल का होना अत्यावश्यक है। इसलिए नदियों की महत्ता तो स्वयंसिद्ध हो जाती है। पौराणिक नदियों के विषय में भारत के निवासियों की आस्था की स्पष्ट झलक दृष्टिगोचर होती है। पुराणानुसार भारत सर्वश्रेष्ठ कर्मभूमि है। यहाँ मनुष्य के रूप में जन्म पाने के लिए देवता भी तरसते हैं। इसलिए वे कहते हैं कि जिन्होंने स्वर्ग और मोक्ष के मार्गभूत भारतवर्ष में जन्म लिया है वे लोग धन्य हैं क्योंकि यहाँ जन्म लेने वाले लोग प्रसन्न होकर सैंकडों प्रवाहित होने वाली नदियों का जलपान करते हैं।[5] पद्म पुराण के अनुसार जिस प्रकार बच्चे को जन्म देकर माता उसका मलमूत्र परिष्कार करती है उसे गोद में बिठाती है उसी तरह नदियाँ भी मनुष्य चाहे कैसा भी हो नीच या पापी हो उसके पापों का प्रक्षालन करती है–

यथा माता स्वयं जन्म मलशौच च कारयेत।
क्रोड़ीकृत्य तथा तेषां गंगा पक्षालयेन्मलम्।।[6]

लोग नदियों को माता मानते हैं और नदी रूप माता भी समस्त लोक को अपनी सन्तान मानती है। प्राचीनकाल से ही लोक तथा शास्त्र दोनों में माता के रूप में मान्य नदियों के लिए विशेष आदर–सम्मान रहा है–

विश्वस्य मातारः सर्वाः पापहराः स्मृताः।
अन्यः सहस्रः प्रोक्ता क्षुद्र नद्योः दिवजोत्तमा।।[7]

नदियों का हमारे जीवन में धार्मिक महत्त्व है। ये पुण्यकारिणी देवतीर्थ कही गई है।[8] पुराणों के अनुसार यदि पितर अपने कर्मों के अनुरूप किसी भी योनि में कष्ट भोग रहे हों तो उनके वंशज उनके निमित्त किसी भी नदी–तीर्थ पर जाकर धार्मिक कृत्य करके पापों और कष्टों का नाश कर सकते हैं। प्रहलाद् ने पापों के विनाशार्थ असी और वरणा नदी के तीर्थों में स्नान कर पितरों तथा देवों की पूजा की थी।[9] गण्डकी सरयू संगम में स्नान, श्राद्ध तथा शंकर की पूजा करने से शिव सायुज्य प्राप्त होता है।[10] वामन पुराण में बतलाया गया है कि जो कौशिकी नदी के संगम पर स्नान कर नियत भोजन करता है वह सभी पापों से मुक्त हो जाता है।[11]

संगम स्थलों को पुण्य तीर्थ कहा जाता है। त्रिलोक विख्यात गङ्गा–यमुना के संगम को तो सभी जानते हैं । संगम स्थल के जल में स्नान करके विशेष प्रकार के फल की प्राप्ति होती है और मरने पर फिर से जन्म नहीं लेना पड़ता।[12] गङ्गा और यमुना के संगम के विषय में और भी कहा गया है कि गङ्गा तथा यमुना का संगम प्रयाग में होता है। इस संगम पर माघ महीने में साठ हजार आठ सौ तीर्थ जाते हैं। सौ हजार गौओं का भली–भाँति दान करने का जो फल होता है, वही फल प्रयाग में माघ मास में तीन दिन स्नान करने का होता है–

षष्टिस्तीर्थसहस्राणि षष्टिस्तीर्थशतानि च।
माघमासे गमिष्यन्ति गङ्यायमुनसंगमम्।।
गवां शतसहस्रस्य सम्यग् दत्तस्य यत् फलम्।
प्रयागे माघमासे तु त्र्यहं स्नातस्य तत् फलम्।।[13]

सरस्वती संगम में स्नान करने पर दुरात्मा प्रेतयोनी भी कभी न क्षय होने वाले स्वर्ग को प्राप्त करता है।[14] वाराणसी में सिद्धों और गन्धर्वों से सेवित त्रिपथगामिनी पुण्यदायिनी गङ्गा नदी बहती है।[15] जो मन्दाकिनी में स्नान कर महादेव की पूजा करते हैं तथा दान, तप, श्राद्ध और पिण्डदान करते हैं वह सात पीढ़ियों तक कुल को पवित्र कर देते हैं।

धन्यास्तु खलु ते विप्रा मन्दाकिन्यां कृतोदकाः।
अर्चयन्ति महादेव मध्यमेश्वरमीश्वरम्।।
स्नानं दानं तपः श्राद्धं पिण्डनिर्वपणं त्विह।
एकैकशः कृतं विप्राः पुनात्यासप्तमं कुलम्।।[16]

कूर्मपुराणानुसार यमुना में स्नान करने तथा इसका जल पीने से

मनुष्य सभी पापों से मुक्त हो जाते हैं और अपनी सात पीढ़ियों तक कुल को पवित्र कर देते हैं।

तत्र स्नात्वा च पीत्वा च यमुनायां युधिष्ठिर।
सर्वपापविनिर्मुक्तः पुनात्यासप्तमं कुलम्।
प्राणांस्त्यजति यस्तत्र स याति परमां गतिम्।।[17]

यमुना नदी को कालिन्दी भी कहते हैं। कालिन्दी में श्रीकृष्ण ने स्नान किया तथा इसके जल का पान भी किया। इस कारण लोक में कालिन्दी के धार्मिक महत्त्व में बढ़ोतरी हुई है।[18] श्रीकृष्ण द्वारा उपभुक्त होने के कारण लोग आज भी इस नदी तट पर ईश्वराधना करते हैं।

पद्म पुराणानुसार गङ्गा विष्णु भगवान् के चरणों से उत्पन्न हुई है।[19] ऐसा भी कहा जाता है कि गङ्गा स्वर्गलोक तथा अन्तरिक्ष लोक को पवित्र कर भूतल पर आते हुए शिवजी के मस्तक पर गिरी। तब शिवजी ने अपनी योगमाया के बल से गङ्गा को अपनी जटाओं में रोक दिया।[20] भगीरथ ने तपस्या करके भागीरथी गङ्गा को स्वर्ग से भूतल पर लाया था।[21] मनुष्य की अस्थियाँ जितने समय तक गङ्गा के जल में रहती है उतने ही समय तक प्राणी स्वर्गलोक में प्रतिष्ठित रहता है इसलिए मृत प्राणी की हड्डियों को गङ्गा जल में प्रवाहित किया जाता है।

यावदस्थिमनुष्यस्य गङ्गातोये प्रतिष्ठति।
तावद् वर्षसहस्राणि स्वर्गलोके महीयते।।[22]

गौतमी नदी पर जहाँ देवताओं ने महेश्वर की आराधना की वहाँ स्थित असंख्य तीर्थों पर दान, स्नान सब प्रकार के पापों का नाशक कहा जाता है।[23] गङ्गा जल में स्नान, पान तर्पण करने से पापों के समुह का प्रतिदिन क्षय होता है।[24] गङ्गा दर्शन, स्पर्श, पान तथा नाम जपने से मनुष्य न केवल स्वयं अपितु अपने हजारों पूर्वजों को भी पवित्र कर देता है।[25] कहा जाता है कि गङ्गा भूतल पर मनुष्यों को, पाताल में नागों को तथा स्वर्गलोक में देवताओं को तारती है, इसी कारण गङ्गा को त्रिपथगा कहा गया है–

क्षितौ तारयते मर्त्यान् नागांस्तारयतेऽप्यधः।
दिवि तारयते देवांस्तेन त्रिपथगा स्मृता।।[26]

यदि मनुष्य जाने अनजाने में कोई पाप कर्म करता है या कहीं दोषयुक्त हो जाता है तो वह पूजा–अर्चना तथा स्तुति करता है। नदियाँ दोष शुद्धि की विशिष्ट स्त्रोत रही है। देवता भी इन स्थानों पर पाप मुक्ति के लिए जाते रहे हैं। इन्द्र और बृहस्पति ने दोषों का निराकरण करने के लिए गौतमी गङ्गा के जिन स्थानों पर स्नान कर हरि और हर की स्तुति की वे तीर्थ उन्हीं के नाम से प्रसिद्ध हुए।[27] पुराणों के अनुसार गौतमी गङ्गा के तट पर जाकर स्नान कर हरि और शंकर की पूजा करने के अतिरिक्त तीनों लोकों में दोष–शुद्धि का अन्य कोई उपाय नहीं है।[28] गङ्गा जल के स्पर्शमात्र से ही कपिल मुनि की क्रोधाग्नि से भस्म हुए सगर पुत्रों को भी स्वर्ग की प्राप्ति हुई थी।[29] कूर्म तथा मत्स्य पुराणों में उल्लिखित है कि कलयुग में पापों को दूर करने में गङ्गा के समान अन्य कोई तीर्थ नहीं है।[30]

सृष्टि के प्रारम्भ में प्रथम उत्पत्ति को लेकर ब्रह्मा और विष्णु में विवाद हुआ। इस कलह से क्रोधित होकर शिवजी ने ब्रह्मा पर एक दृष्टि डाली जिससे चतुर्मुख ब्रह्मा का सिर शिवजी के हाथ में चिपक गया। इस ब्रह्महत्या के पाप से मुक्ति पाने के लिए शिवजी विभिन्न नदी–नदों पर स्नान करने गए। अन्ततः वाराणसी में असि और वरणा नदी के संगम स्थल पर स्नान कर भगवान् सूर्य का दर्शन कर केशव का दर्शन किया, जिससे ब्रह्म कपाल उनके हाथ से छूट गया और शिवजी ब्रह्महत्या के पाप से मुक्त हो गए।[31] स्कन्द पुराण में वरणा और असि नदी को वाराणसी क्षेत्र की रक्षक बतलाया गया है।[32]

दिव्य शक्ति सम्पन्न होने के कारण नदी स्नान से दैहिक विकारों की भी निवृत्ति होती है। ऐसा कहा जाता है कि ध्वजपर्वत से निकलकर माहेश्वरी नदी राम गङ्गा में मिलती है वहाँ संगम में स्नान करने पर मनुष्य का गूंगापन दूर हो जाता है।[33] कलयुग में नदी तीर्थों के नाम जाप का भी विशेष महत्त्व है। विष्णु पुराणानुसार विपाशा प्लक्षद्वीप की सात समुद्रगामिनी नदियों में से एक है। इस नदी का नाम सुनने मात्र से ही पाप दूर हो जाते हैं।

स एव द्विगुणो ब्रह्मन् प्लक्षद्वीप उदाहृतः।
तेषां नद्यस्तु सप्तैव वर्षाणां च समुद्रगाः।
नामतस्ताः प्रवक्ष्यामि श्रुताः पापं हरन्ति याः।।
अनुतप्ता शिखी चैव विपाशा त्रिदिवाक्लमा।
अमृता सुकृता चैव सप्तैतास्तत्र निम्नगाः।।[34]

ऐसा कहा जाता है कि जो सैंकड़ों योजन दूर से भी गङ्गा का नामोच्चारण करता है तो उसके समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं और उसे विष्णुलोक की प्राप्ति हो जाती है।[35] इसलिए गङ्गा को सभी तीर्थों में सर्वोत्तम तीर्थ, नदियों में महानदी तथा पाप करने वाले प्राणियों के लिए मोक्षदायिनी कहा गया है–

.....गङ्गायां..... ।
तीर्थानां तु परं तीर्थं नदीनां तु महानदी।
मोक्षदा सर्वभूतानां महापातकिनामपि।।[36]

गरुड़ पुराण में वर्णन किया गया है कि गण्डकी नदी में विष्णु शालग्राम शीला के रूप में निवास करते हैं। उनके स्पर्श मात्र से ही करोड़ों जन्मों के पाप नष्ट हो जाते हैं।[37] कहा जाता है कि जहां पर सरस्वती नदी का पतन होता है वह स्थल समस्त पापों का हरण करने वाला है।

सरस्वत्याश्च पतनं सर्व पाप हरं शुभम्।
तत्र स्नातो नरो देवि अवर्णेऽपि यतिर्भवत्।।[38]

विष्णु पुराण में जम्बूद्वीप से जम्बू नदी के निकलने का उल्लेख किया गया है। इस नदी के जल को वहाँ रहने वाले लोग पीते हैं। इसका पान करने से वहाँ के शुद्धचित्त लोगों को पसीना, दुर्गन्ध, बुढ़ापा या इन्द्रियक्षय नहीं होता।[39] पद्मपुराण में नर्मदा नदी की उपादेयता का उल्लेख इस प्रकार किया गया है कि गङ्गा और सरस्वती की तुलना में नर्मदा विशेष पवित्र है। गङ्गा कनखल में, सरस्वती कुरुक्षेत्र में किन्तु नर्मदा ग्राम से अरण्य तक सर्वत्र पवित्रतम है। यमुना का जल एक सप्ताह में, गङ्गा का जल यथा शीघ्र परन्तु नर्मदा का जल दर्शनमात्र से पवित्र कर देता है।

पुण्या कनखले गङ्गा कुरुक्षेत्रे सरस्वती।
ग्रामे वा यदि वाऽरण्ये पुण्या सर्वत्र नर्मदा।।
त्रिभिः सारस्वतं तोयं सप्ताहेन तु यामुनम्।
सद्यः पुनाति गाङ्गेयं दर्शनादेव नार्मदम्।।[40]

नदियों की महत्ता की प्रमाणिकता इसी बात से ज्ञात होती है कि साधारण से साधारण व्यक्ति भी सामान्य स्नान करते हुए सभी अर्चनीय नदियों का मानस सानिध्य प्राप्ति हेतु जाप करता है। जिससे उसे शुद्धता की प्राप्ति हो सके–

गङ्गे च यमुनेचैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धु कावेरी जलेऽस्मिन् संनिधिं कुरु।।[41]

उपरिलिखित वर्णन से विदित होता है कि नदियों का मानव जीवन में बहुत महत्त्व है। जल के अभाव में मनुष्य जीवित नहीं रह सकता। पवित्र नदियों का जल मनुष्य के पापों को समाप्त कर उसे मोक्ष की प्राप्ति भी करवाता है। पुराणों में अनेक नदियों की उपादेयता को बहुत सुन्दर ढंग से दर्शाया गया है।

सन्दर्भ

1. वामन पुराण, 95.86
2. नारद पुराण, 1.1.62
3. ऋग्वेद, 10.75.1–9
4. चतुर्वेदी द्वारकाप्रसाद शर्मा, संस्कृत शब्दार्थ कौस्तुभ, पृ०, 582
5. यतो हि कर्मभूरेषा ह्यतोऽन्या भोगभूमयः।
   गायन्ति देवाः किल गीतकानि धन्यास्तु ते भारत भूमि भागे।
   स्वर्गापवर्गास्पद मार्गभूते भवन्ति भूयः पुरुणाः सुरत्वात्।
   अन्याश्च शतशस्तत्र क्षुद्रनद्यो महामुनेः।
   ताः पिबन्ति मुदा युक्ता जलादादिषु ये स्थिताः।। विष्णु पुराण, 2. 3.22,24
6. पद्म पुराण, 1.27.16
7. ब्रह्म पुराण, 27.40; ब्रह्माण्ड पुराण, 1.8.39
8. ब्रह्म पुराण, 37.35
9. वामन पुराण, 83.30
10. स्कन्ध पुराण, 135.72–75
11. वामन पुराण, 36.37
12. कूर्म पुराण, 1.34.20
13. वही, 1.36.1–2
14. वराह पुराण, 172.93
15. मत्स्य पुराण, 183.7
16. कूर्म पुराण, 1.32.29–30
17. वही, 1.37.3
18. भागवत पुराण, 10.31.39–40
19. पद्म पुराण, 1.27.41
20. मत्स्य पुराण, 121.30–31
21. वही, 12.44
22. पद्म पुराण, 1.27.48
23. ब्रह्म पुराण, 94.46,50
24. पद्म पुराण, 1.27.3–4
25. अग्नि पुराण, 110.5–6
26. मत्स्य पुराण, 106.51
27. ब्रह्म पुराण, 122.101
28. वही, 122.66
29. पद्म पुराण, 9.9.12
30. कूर्म पुराण, 1.36.37; मत्स्य पुराण, 106.55
31. वामन पुराण, 3.5–49
32. स्कन्द पुराण, 2.51.26–27
33. वही, 111.27
34. विष्णु पुराण, 2.4.2, 10–11
35. ब्रह्मवैवर्त पुराण, 2.10.71
36. मत्स्य पुराण, 107.52–53
37. गरूड़ पुराण, 45.113–114
38. वराह पुराण, 2.154.17
39. विष्णु पुराण, 2.2.20–22
40. पद्म पुराण, 2.9.6–7
41. ब्रह्मवैवर्त पुराण, 1.25.66